दैनिक जागरण द्वारा आयोजित 'सपनों को चली छूने, फेज–चार' कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–29.11.2016, समय–अप॰ 7:00 बजे, स्थान–होटल मौर्या)

दैनिक जागरण द्वारा आयोजित 'सपनों को चली छूने', कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित राज्य के शिक्षा मंत्री श्री अशोक चौधरी जी, समाज कल्याण विभाग की मंत्री श्रीमती मंजू वर्मा जी, समाज कल्याण विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती वंदना किन्नी जी, महिला विकास निगम की प्रबंध निदेशक डॉ॰ एन॰ विजयालक्ष्मी जी, दैनिक जागरण के सी॰जी॰एम॰ श्री आनंद त्रिपाठी जी, अखबार के एशोसिएट एडिटर श्री सद्गुरू शरण अवस्थी जी, जागरण 'पहल' के प्रभारी श्री हरिओम मिश्रा जी, कार्यक्रम में उपस्थित 'सपनों को चली छूने' परियोजना से जुड़ी सभी कार्यकर्त्तागण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

'सपनों को चली छूने' आपके कार्यक्रम के शीर्षक पर जब मैं सोच रहा था, तो मुझे अपने देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम साहब का एक कथन याद आया। उनकी पंक्तियाँ हैं कि–''सपने वे नहीं हैं, जिन्हें हम सोने के दौरान देखते हैं, बल्कि सच्चे सपने तो वे हैं, जो हमें सोने ही नहीं देते।'' कितनी लाजवाब पंक्तियाँ हैं ये कलाम साहब की। उन्होंने जिन्दगी की हकीकत अपनी इन पंक्तियों में बयान किया है। मुझे लगता है, आप भी जिन सपनों को छूने के लिए दिन–रात अपनी कोशिशें जारी रखी हुई हैं, उन सपनों ने आपमें एक बेचैनी पैदा कर दी है, एक नया जोश और जज्बा भर दिया है। एक कहावत यह भी है कि ''सपने कभी अपने नहीं होते।'' किन्तु, इस कहावत में भी मुझे पूरी सच्चाई नहीं दिखती। सपने अपने हो सकते हैं, अगर उन्हें साकार करने हेतु मन में एक सकारात्मक जिद्द और जुनून है। आज के मनुष्य की विडम्बना है कि वह अपने भविष्य

को लेकर कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता। सभी अपने भविष्य को लेकर इतनी सावधानी बरतते हैं कि बराबर हम जीवन में कोई न कोई विकल्प लेकर चलना चाहते हैं। विकल्पों में जीने की हमारी आदत हमारे भीतर की संकल्प–भावना को कमजोर करती है। हम अगर अपना कोई एक लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो उसके प्रति दृढ़इच्छा–शक्ति और संकल्प की भावना हममें होनी चाहिए। आप जब सपनों को छूने के लिए उड़ान भरना चाहती हैं, तो आपको भी दृढ़व्रती और दृढ़निश्चयी होना होगा।

आप सभी पढ़ी–लिखी प्रबुद्ध वर्ग से आने वाली महिलाएँ और युवतियाँ हैं। आज महिला–सशक्तीकरण की जब हम चर्चा करते हैं तो हमारा प्रयास महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक हर तरह के विकास का होना चाहिए।

नारी–सशक्तीकरण का मुद्दा एक ऐसा मुद्दा है, जो समय की माँग है, और हमारी भारतीय संस्कृति की परम्पराओं के अनुरूप भी है। नारियों का आर्थिक सशक्तीकरण हो, इसके लिए आवश्यक है कि ज्ञान–विज्ञान के हर क्षेत्र में उनकी पैठ हो, सेवा के हर क्षेत्र में उनकी नियुक्तियाँ हों और ऐसा कोई विभेद नहीं बरता जाए, जो मनोवैज्ञानिक तौर पर भी नारियों को कमजोर बनाता हो। कठोर कानूनी प्रावधानों से समस्याएँ नियंत्रित होती हैं, लेकिन कोई भी दुर्भावना और बुरे विचार, संस्कार या आदत हममें से बिल्कुल हट जाए, निर्मूल हो जाए–इसके लिए जरूरी है कि हम संवेदना और विचारों के स्तर पर भी अपने को सकारात्मक सामाजिक परिवर्त्तनों के प्रति तैयार कर लें। पुरूष और नारी–दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों की एक दूसरे पर समान रूप से निर्भरता है। वस्तुतः नारी–सशक्तीकरण के प्रयासों को गति प्रदान करना पुरूष–वर्ग का परम दायित्व है, ताकि समाज का संतुलित विकास हो।

मैं मानता हूँ कि सरकारी और गैरसरकारी प्रयासों तथा धीरे–धीरे हुए शैक्षिक विकास के कारण, नारी–सशक्तीकरण की हमारी कोशिशें तेजी से कामयाब होती दिख रही हैं, लेकिन अब भी हमें मीलों दूर की यात्रा तय करनी है, काफी आगे जाना है। खासकर ग्रामीण और गरीब आबादी में महिलाओं की स्वास्थ्य–स्थिति, उनकी शिक्षा तथा उनकी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए सबको मिल–जुलकर योजनाबद्ध और चरणबद्ध रूप से प्रयास करने होंगे। मुझे खुशी है कि आज की हिन्दुस्तानी मीडिया सिर्फ समस्याओं पर अपनी लेखनी या नजर ही नहीं दौड़ा रहा, बल्कि समस्याओं के निराकरण के लिए अपनी सार्थक योजनाओं के माध्यम से ठोस प्रयास भी कर रहा है। बिहार सरकार द्वारा राज्य के सभी सेवा–संवर्गों की सीधी नियुक्ति में महिलाओं की 35 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण की व्यवस्था, पंचायती राज संस्थाओं, नगर निकायों एवं शिक्षकों की नियुक्ति में 50 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान आदि कई ऐसे प्रयास हैं, जो राज्य में महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में तेजी से बदलाव ला रहे हैं। 'जीविका' परियोजना भी इस दिशा में एक सार्थक और ठोस प्रयास के रूप में सामने आयी है। राज्य सरकार के सात निश्चयों में दूसरा निश्चय–'आरक्षित रोजगार महिलाओं का अधिकार' –हमारी बहनों की आर्थिक स्थिति में सुधार में सहायक होगा–ऐसी आशा की जा सकती है। केन्द्र सरकार की भी बहुतेरी योजनाएँ महिलाओं के समग्र विकास की दिशा में सफल सिद्ध हो रही हैं।

मुझे लगता है, दैनिक जागरण परिवार का महिला सशक्तीकरण अभियान की दिशा में संचालित 'सपनों को चली छूने, का कार्यक्रम भी एक सफल कार्यक्रम साबित होगा। मैं आज इस अभियान के तहत सम्मानित हुई सभी महिलाओं को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं अखबार के प्रबन्धन एवं संपादकीय टीम के सभी सदस्यों को भी इस

सार्थक पहल के लिए साधुवाद देता हूँ। आनेवाला नया वर्ष आप सबके लिए मंगलमय हो। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

****

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।